UGC Approved Care Listed Journal

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

वर्ष/Year-11 अंक/Vol.-42 अप्रैल-जून 2022/April-June 2022 द्विभाषी/Bilingual

Aadhunik Sahitya

संपादक
डॉ. आशीष कंधवे*
Editor
Dr. Ashish Kandhway

संरक्षक प्रो. उमापति दीक्षित कुमार अविकल मनु	Patron Prof. Umapati Dixit Kumar Avikal Manu
उप संपादक रजनी सेठ	Sub Editor Rajni Seth
प्रबंध संपादक ममता गोयनका	Managing Editor Mamta Goenka
विशेष संवाददाता (अमेरिका) रश्मि शर्मा	Special Correspondent (USA) Rashmi Sharma
संवाददाता (अंग्रेजी) निलांजन बैनर्जी	Correspondent (English) Nilanjan Banerjee

*आशीष कंधवे (मूल नाम आशीष कुमार)

आधुनिक साहित्य में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबन्धित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में सम्पादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

अनुक्रम

संपादकीय

- डॉ॰ आशीष कंधवे / इतिहास बोध : नैसर्गिक निर्दोष मनःस्थिति का यथार्थ / 8

शोध-संसार

- डॉ. नवकान्त दास एवं प्रांजल कुमार नाथ / भारतीय संस्कृति में शंकरदेव..../ 16
- डॉ. ब्रह्मलता / मनमोहन सहगल के उपन्यासों में संघर्षशील नारी / 23
- डॉ. प्रेमप्रकाश मीणा / प्रश्न मीडिया की भाषा / 29
- श्रीमती निकिता रामटेके एवं डॉ. शंकर मुनि राय / गिरीश पंकज के कथा साहित्य.../ 32
- अजय कुमार यादव एवं डॉ. कविता पड़ेगाँवकर / महिला एवं पुरुष हैंडबॉल खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के गुणों का तुलनात्मक अध्ययन / 37
- बसन्त कुमार / भाषा और व्यक्तित्व / 41
- मनीष कुमार कुर्रे / छत्तीसगढ़ का इतिहास (नामकरण के संदर्भ में) / 44
- चैतराम यादव एवं डॉ. (श्रीमती) बी.एन. जागृत / डॉ. गणेश खरे का हिन्दी साहित्य..../ 53
- एस कुमार गौर एवं डॉ. (श्रीमती) बी.एन. जागृत / कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री पात्रों की प्रासंगिकता (वर्तमान संदर्भ में) / 57
- डॉ. प्रियंका सिंह / समकालीन आदिवासी कविता : समस्यायें और चुनौतियाँ / 62
- रूबी शर्मा एवं डॉ. विनोद कुमार जैन / समाकेतिक शिक्षा में डिजिटलीकरण से विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन / 66
- डॉ. सुनीता शर्मा / समकालीन हिन्दी कविता में चित्रित पर्यावरण प्रदूषण (राजेश जोशी और ज्ञानेन्द्रपति के विशेष संदर्भ में) / 74
- सोनिया / रामचरितमानस की वर्तमान में प्रासंगिकता / 82
- माहेश्वरी एवं डॉ. चन्द्रकुमार जैन / स्त्री-विमर्श : समकालीन परिप्रेक्ष्य में / 86
- डॉ. भास्कर लाल कर्ण / भारतीय आधुनिकता / 89
- डॉ. वेदप्रकाश / भारतेंदु का बलिया व्याख्यान और वर्तमान परिदृश्य / 96
- डॉ. जैनेन्द्र कुमार पाण्डेय / सूचना क्रांति के दौर में भाषिक चुनौतियाँ / 101
- दीपमाला एवं डॉ. कविता पड़ेगाँवकर / ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन / 106
- सत्येन्द्र पाण्डेय / आदमी का ज़हर बनाम मोछू नेटुआ / 109
- डॉ. अंजू बसंल / भारतीय संस्कृति के दर्पण में 'विदुर नीति' / 115
- प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल एवं दीप्ति ठाकुर / साहित्य में व्यंग्य / 122
- गिरजेश कुमार / मानव समाज को सामाजिक समरसता का पाठ..../ 125
- रेणु देवी / स्त्री चेतना का सारगर्भित स्वरूप : ममता कालिया का नरक..../ 130
- संदीप सो. लोटलीकर / लेखक-पत्नी की त्रासदी की गाथा 'एक कहानी यह भी' / 135
- डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव / हिन्दी यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन / 141
- डॉ. मधु कौशिक / भारतीय रंगमंच में मंच की शास्त्रीय परिकल्पना / 145

भाषा और व्यक्तित्व

—बसन्त कुमार

जन्म से मृत्युपर्यन्त मानव जितने भी अनुभव प्राप्त करता है उसमें भाषा की अहम भूमिका होती है, जिस प्रकार की भाषा होगी उसका प्रभाव व्यक्ति के अनुभव पर सीधा-सीधा पड़ता है क्योंकि भाषा केवल शब्द या वाक्य नहीं है अपितु भाषा मनोभाव को प्रगट करने का साधन है, जो केवल शब्दों से नहीं बल्कि भाव भंगिमाओं के साथ शब्दों के माध्यम से प्रगट करने का साधन है। भाषा-भाव है, भाषा-लहजा है, भाषा-व्यवहार का तरीका है, भाषा-सभ्यता है, भाषा-व्यक्ति की पहचान है, तो साथ ही साथ भाषा के प्रयोग के जटिल नियम हैं, भाषा व्यवहार की नियमावली है। यही कारण है कि भाषा का प्रभाव प्रत्यक्ष होता है।

भाषा व्यक्तित्व का आइना है, क्योंकि व्यक्ति के भावों की अभिव्यक्ति उसकी भाषा से परिलक्षित होती है। व्यक्ति के क्रियाकलापों को आकार भाषा के माध्यम से प्राप्त होता है, इंसान को इंसान से जोड़ने का काम भाषा करती है, व्यक्ति का परिवार समाज और राष्ट्र में स्थान भाषा के द्वारा ही निर्धारित होता है, यहाँ तक कि व्यक्ति की पहचान उसकी भाषा ही है। भाषा प्रयोग की वस्तु है, भाषा के संबंध में एक कहावत बहुत प्रचलित है **"बातन हाथी पाइये, बातन हाथी पाँव"** अर्थात् आप जिस प्रकार से भाषा का प्रयोग करते हैं उसी प्रकार से आपको प्रति उत्तर प्राप्त होता है। भाषा के प्रयोग से आपको हाथी (बड़ी से बड़ी चीज) भी प्राप्त हो सकती है और आप हाथी के पाँव तले कुचले जा सकते हैं। अर्थात् एक क्षेत्र विशेष में, घर परिवार समाज में भाषा तो सभी एक ही होती है परन्तु प्रभाव उसके उपयोग का पड़ता है।

भाषा और व्यक्ति का विकास चोली दामन के साथ जैसा है व्यक्ति का विकास भाषा के माध्यम से हुआ और भाषा का विकास व्यक्ति के माध्यम से हुआ। भाषा के बगैर व्यक्ति और समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। जब भाषा का विकास नहीं हुआ था तब व्यक्ति आखेट में अपना जीवन व्यतीत करता था, जैसे-जैसे भाषा विकसित हुई वैसे-वैसे व्यक्ति ने समूह और समाज की संकल्पना सामने आई, आखेट युग से लेकर आज तक के विकास में उपरिवर्धन में भाषा ने ही माध्यम का कार्य किया। जब भी मानव के विकास में भाषा के प्रभाव पर संदेह होता है तो उसके उत्तर के रूप में एक प्रश्न जहन में आता है कि भाषा न होती तो क्या होता? अत: इसके आधार पर नि:संदेह यह कहा जा सकता है कि भाषा ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास का उपकरण है, साधन है। विकास का संरक्षण एवं परिमार्जन भाषा के द्वारा ही संभव है। भाषा के

बगैर विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि कल्पना के लिये भी भाषा की ही आवश्यकता होगी।

भाषा के संदर्भ में चोमस्की महोदय ने कहा है कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। यदि इसका विस्तार किया जाये तो व्यक्ति के अन्दर इसके अपने भाव क्या हैं, क्या व्यक्ति चाह रहा है, उसकी सोच क्या है, को आकार भाषा के माध्यम से ही प्रदान किया जाना संभव है। यहाँ तक कि चोमस्की महोदय ने बताया कि वाक्य रचना के नियम (संरचनात्मक ज्ञान) का ज्ञान आंशिक रूप से जन्मजात होता है। प्राथमिक भाषाई डाटा को इस जन्मजात भाषाई क्षमता के द्वारा पूरक किया जाना चाहिये, यह तर्क भी प्रस्तुत किया कि एक बिल्ली का का बच्चा और मानव का बच्चा दोनों अगमनात्मक तर्क करने में सक्षम हैं परन्तु मानव के बच्चे में भाषा को समझने एवं उत्पादन करने की क्षमता होती है, परन्तु बिल्ली के बच्चे में यह क्षमता नहीं होती है। चोमस्की ने क्षमता के इस अंतर को भाषा अधिग्रहण उपकरण के रूप में संदर्भित किया और यही मानव के विकसित होने का मूल मंत्र है।

भाषा उपयोग में जितनी सहज और सरल है उतनी ही संवेदनशील है एक छोटा सा परिवर्तन पूरे भाव को बदल देता है, इस हेतु मुझे एक उदाहरण याद आता है कि एक कक्षा में शिक्षक ने बोर्ड पर लिखा-आजबाजारबंदरखाजायेगा। और इसे विद्यार्थियों को पढ़ने के लिये कहा गया तो कुछ विद्यार्थियों ने इसे आज बाजार बंद रखा जायेगा पढ़ा, तो कुछ ने इसे-आज बाजार बंदर खा जायेगा पढ़ा। अत: भाषा कोई भी हो वह संवेदनशील होती है एक छोटा सा परिवर्तन पूरे अर्थ/भाव को परिवर्तित कर देता है।

भाषा और व्यक्तित्व के संबंध को समझने से पहले भाषा और व्यक्ति के संबंध को समझना आवश्यक है, नवजात बच्चे के जीवित होने न होने की सर्वप्रथम पहचान उसकी आवााज होती है। वह अपने भाव (भूख, प्यास, दर्द, खुशी) आदि को आवाज के माध्यम से प्रगट करता है और यह प्रकृति जन्मजात होती है। जैसे-जैसे उसका शारीरिक विकास होता है वैसे-वैसे उसमें भाषा के उच्चारण की क्षमता विकसित होती जाती है और व्यक्ति इन भावों को अनुभवों को भी संरक्षित/धारण करता चला जाता है। इसका व्यक्ति और व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है, विकास का निर्धारण व्यक्ति की आन्तरिक क्षमता (जन्मजात, जैविक और अर्जित) से तात्पर्य जन्मजात वह क्षमता जो उसे अनुवांशिक रूप से प्राप्त हुई, जैविक और अर्जित जो पूर्व अनुभवों से प्राप्त की है, के साथ बाहरी वातावरण से अर्जित किया करता है, तब उसमें यह प्रक्रिया सतत चलती रहती है और नित नये अनुभवों, भावों को जन्म देती है। व्यक्ति अपने आप को और बाहरी वातावरण को पहचानता है इन्हीं क्षमताओं के समतुल्य वह अपना प्रदर्शन भी करता है। व्यक्ति अपने आप को उतना ही प्रदर्शित कर सकता है जितनी उसकी आन्तरिक क्षमता होती है। अर्थात व्यक्ति को अपने आप को प्रदर्शित करने की उच्चतम कोटि उसकी अपनी आन्तरिक क्षमता कम या बराबर होती है। वह अपने आप को क्यों और कैसा प्रदर्शित करना चाहता है यह उसकी आन्तरिक क्षमता पर निर्भर करता है। कालान्तर में जब व्यक्ति

के पास अर्जित अनुभव प्रचुर मात्रा में एकत्रित हो जाते है तब व्यक्तित्व का स्वरूप भी स्थायित्व ग्रहण कर लेंता है। कोई व्यक्ति अंर्तमुखी है या बहिर्मुखी है वह आन्तरिक शक्तियों के अनुरूप है जिसमें उसकी अर्जित शक्तियों/क्षमताओं की अहम भूमिका होती है।

जितने भी बाहरी अनुभव होते हैं वे अर्जित अनुभवों का रूप धारण करते हैं, वह उसे दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार से प्राप्त होते हैं और इन्हें प्रगट करने का माध्यम और साधन व्यक्ति की भाषा होती है। और इन्हीं अनुभव के आधार पर ही व्यक्ति के गुणों का निर्धारण होता है। ये गुण समग्र रूप में व्यक्ति के प्रकार (type) और लक्षण (traits) का निर्धारण करते हैं।

व्यक्ति के प्रदर्शित रूप को ही व्यक्तित्व कहते हैं, अत: कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के अच्छे, बुरे अनुभवों का आपेक्षित रूप होता है।

जन्म से मृत्युपर्यन्त मानव जितने भी अनुभव प्राप्त करता है उसमें भाषा की अहम भूमिका होती है, जिस प्रकार की भाषा होगी उसका प्रभाव व्यक्ति के अनुभव पर सीधा-सीधा पड़ता है क्योंकि भाषा केवल शब्द या वाक्य नहीं है अपितु भाषा मनोभाव को प्रगट करने का साधन है, जो केवल शब्दों से नहीं बल्कि भाव भंगिमाओं के साथ शब्दों के माध्यम से प्रगट करने का साधन है। भाषा-भाव है, भाषा-लहजा है, भाषा-व्यवहार का तरीका है, भाषा-सभ्यता है, भाषा-व्यक्ति की पहचान है, तो साथ ही साथ भाषा के प्रयोग के जटिल नियम हैं, भाषा व्यवहार की नियमावली है। यही कारण है कि भाषा का प्रभाव प्रत्यक्ष होता है। कभी-कभी कड़वी बातों को भी मीठे ढंग से प्रस्तुत किया जाता है और मीठे भाव भी भाषा के माध्यम से कड़वे अनुभव उत्पन्न करता है, अत: कहा जा सकता है कि ''भाषा और व्यक्तित्व एक दूसरे के पूरक हैं'' भाषा की खूबसूरती को व्यक्त करते हुए मैं अपने शब्दों को विराम देने की अनुमति चाहता हूँ।

''काने को काना कहोगे तो काना जायेगा रूठ।
और धीरे-धीरे पूछ लो भैया कैसे गई थी फूट।।''

संदर्भ :

- भाई योगेन्द्रजीत, हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
- क्षत्रिय के. मातृभाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
- लाल रमन बिहारी, हिन्दी शिक्षण रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ
- रघुनाथ हिन्दी शिक्षण विधि, पंजाब घर जालंधर
- शर्मा लक्ष्मीनारायण, भाषा शिक्षण की विधियाँ और पाठ नियोजन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
- शुक्ल राम चन्द्र, हिन्दी भाषा का इतिहास, DPH नई दिल्ली
- On Language: Chomsky's Classic Works: Language and Responsibility and Reflections on Language Kindle Edition by Noam Chomsky (Author) Format: Kindle Edition

❐❐❐

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास वि.वि., विलासपुर (छ.ग.)